वर्ष :: 33 अंक : 28
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला
वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता
झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

/mithilavarnan

बोकारो :: रविवार, 09 अप्रैल, 2023 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका

अवश्य पढ़ें-
निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मैनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

अपनों को करके अनाथ, चले गए जगरनाथ

ऐसा शिक्षा मंत्री, जो गांव के बच्चों को खुद सुबह उठाकर भेजता था स्कूल

थम गई 'टाइगर' की दहाड़... शोक में डूबा झारखंड

कार्यालय संवाददाता

बोकारो : अपने उपनाम के समान हौसले से भी 'टाइगर' के रूप में विख्यात झारखंड के शिक्षा मंत्री जगरनाथ महतो को अंततः कोरोना ने लील लिया। जिंदगी की जंग भी उन्होंने अंतिम समय तक 'टाइगर' के रूप में लड़ी। लेकिन, किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। अपनों को अनाथ बना जगरनाथ हमेशा-हमेशा के लिए दुनिया से चले गए। 31 दिसंबर 1962 को जन्मे स्व. जगरनाथ ने चेन्नई के एमजीएम अस्पताल में आखिरी सांस ली। वह चार भाइयों में से सबसे बड़े थे। उनके पिता लगभग 83 वर्षीय नेम नारायण महतो अब भी जीवित हैं और महज 60 साल की उम्र में अपने बेटे की अर्थी उठती देख उनकी आंखों के आंसू अब भी थमने का नाम नहीं ले रहे।

डुमरी के विधायक सह- शिक्षा मंत्री जगरनाथ महतो की क्षेत्र में अलग पहचान थी। वह यूं ही जन-जन के नेता नहीं कहलाते थे। साप्ताहिक जनता दरबार लगाकर समस्याओं को सुनने, जनभावना को समझने और विकास के लिए तत्पर रहने वाले राजनेता और जननेता के रूप में उनकी पहचान थी। 2004 में पहली बार विधायक बनने के बाद उन्होंने जनता की समस्याओं के निराकरण के लिए डुमरी और नावाडीह प्रखंड में अगल-अलग साप्ताहिक जनता दरबार की शुरुआत की। इस जनता दरबार से आमलोगों को काफी लाभ मिला। यही कारण था कि जनता दरबार के दिन सुदूरवर्ती गांवों से भी ग्रामीण पहुंचकर व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं को उनके समक्ष रखते थे, जिसका मौके पर समाधान होता था।

पहले विधायक और फिर मंत्री बनने के बाद भी वे क्षेत्र की जनता के लिए हमेशा उपलब्ध रहते थे। कभी कोई घटना या हादसा होता था तो जानकारी मिलते ही वे मौके पर पहुंच जाते थे, फिर चाहे घटना देर रात की हो या अहले सुबह की। शिक्षा के क्षेत्र में काफी रुचि रखने के कारण स्कूली बच्चों को मैट्रिक परीक्षा की तैयारी करवाने में भी पूरी तरह सक्रिय रहा करते थे। वह ऐसा शिक्षा मंत्री थे, जो स्वयं स्कूली बच्चों के घरों में जाकर उन्हें देर सुबह जगाने का कार्य करते थे, जिसके कारण शिक्षा क्षेत्र में काफी लोकप्रिय बने हुए थे। टॉपर को अल्टो कार देने की पहल भी उन्हीं की थी। मालूम **(शेष पेज- 7 पर)**

बोले सीएम हेमंत - जगरनाथ दा दिल में थे, दिल में रहेंगे

हेमंत सोरेन ने कहा कि जगरनाथ दा दिल में थे, दिल में रहेंगे, हमें प्रेरित करते रहेंगे, आपका संघर्ष बेकार नहीं जाएगा, हर हाल में आपका सोच साकार होगा। मुख्यमंत्री ने अपने बयान में कहा 'जगरनाथ दा इस सरकार में मंत्री के साथ साथ मेरे बड़े भाई और एक ऐसे अभिभावक की भूमिका में थे, जो गलतियां होने पर डांट भी लगा देते थे और सही कदम पर पीठ भी थपथपा देते थे। टाइगर के नाम से मशहूर जगरनाथ दा ने अपने संघर्ष , कर्तव्य निष्ठा, सादगी, और विचारों की स्पष्टता के कारण अपनी खास और अलग पहचान बनाई। निर्धारित लक्ष्य हर हाल में हासिल करने की उनकी जिद से मैंने बहुत कुछ सीखा।'

शिवा महतो को मानते थे राजनीतिक गुरु

जगरनाथ महतो जीवनपर्यंत स्व. शेरे शिवा महतो को अपना राजनीतिक गुरु के रूप में मानते आए। इस बीच कई चुनावों में गुरु-चेला के बीच चुनावी टकराव हुए। शिवा महतो और जगरनाथ महतो राजनयिक क्षेत्र में काफी दिनों तक साथ चले। वर्ष 2000 में झामुमो छोड़ समता पार्टी में शामिल होकर पहली बार डुमरी विधानसभा का चुनाव लड़े, मगर उन्हें उस चुनाव में हार का मुंह देखना पड़ा। वर्ष 2004 में पुनः झामुमो के अध्यक्ष शिबू सोरेन के प्रति आस्था जताते हुए झामुमो में शामिल हुए और वर्ष 2004 की विधानसभा चुनाव में झामुमो के टिकट पर चुनाव लड़े और जीत हासिल की। फिर वे 2004 से 2019 तक के चुनाव में डुमरी विधानसभा का प्रतिनिधित्व किया और 2019 में महागठबंधन की सरकार में उन्हें शिक्षा मंत्री सह मध निषेध मंत्री बनाया गया।

ऐसे पड़ा 'टाइगर' उपनाम

जगरनाथ महतो को वर्ष 1995 में जिला प्रशासन द्वारा सीसीए लगाकर हजारीबाग सेंट्रल जेल भेजा गया था। काफी कानूनी दांवपेंच के बाद न्यायालय रांची से सीसीए धारा को निरस्त किया गया था। न्यायालय से रिहाई होने पर झामुमो द्वारा भंडारीदह में विशाल आमसभा में गिरिडीह के तत्कालीन सांसद राजकिशोर महतो ने उन्हें उनकी राजनीतिक सक्रियता एवं जुझारूपन को देखते हुए 'टाइगर' का उपनाम दिया था।

बिनोद बाबू के नारे से मिली प्रेरणा : शिक्षा के क्षेत्र में सुधार, नए कॉलेज की शुरुआत और मेधावी छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित करना उन्होंने अपने राजनीतिक गुरु पूर्व विधायक शिवा महतो से सीखा। विनोद बिहारी महतो के 'पढ़ो और लड़ो' के नारे से उन्हें नए शिक्षण संस्था खोलने की प्रेरणा मिली, इसलिए उन्होंने नावाडीह में देवी महतो स्मारक इंटर व डिग्री कॉलेज, डुमरी प्रखंड के बेरगी में जगरनाथ महतो इंटर कॉलेज की स्थापना की थी। वहीं झारखंड कॉलेज और पारसनाथ डिग्री कॉलेज के नए भवन का निर्माण कर उच्च शिक्षा को आगे बढ़ाने में मदद की। उन्होंने डुमरी और नावाडीह में आईटीआई, डुमरी के कलहाबार में सरकारी डिग्री कॉलेज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया।

अंतिम विदाई में उमड़ा जनसैलाब

बोकारो जिले के चंद्रपुरा प्रखंड अंतर्गत भंडारीदह के अलारगो स्थित उनके पैतृक गांव में स्व. महतो को अंतिम विदाई दी गई। राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, झारखंड विधानसभा अध्यक्ष रवींद्रनाथ महतो, श्रम मंत्री सत्यानंद भोक्ता, परिवहन मंत्री चंपई सोरेन, कृषि मंत्री बादल पत्रलेख, पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश ठाकुर, राज्यसभा सदस्या डा. महुआ मांझी सहित हजारों लोग दामोदर नदी के भंडारीदह घाट पर स्व. महतो की अंत्येष्टि में शामिल हुए। सभी ने नम आंखों से उन्हें अंतिम विदाई दी। दिवंगत शिक्षा मंत्री जगरनाथ महतो पंचतत्व में विलीन हो गये। उन्हें पूरे राजकीय सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी गई। स्व. महतो के पुत्र अखिलेश महतो उर्फ राजू ने पार्थिव शरीर को मुखाग्नि दी। भंडारीदाह दामोदर नदी घाट पर अंतिम दर्शन को भारी जनसैलाब उमड़ा था। इस दौरान हर चेहरा गमगीन रहा, हर आंख नम रही। कोई भी ऐसा नहीं था, जो रोता न दिखा। आमलोगों के नेता के जाने का दुख सबके चेहरे पर स्पष्ट दिख रहा था। अंत्येष्टि के दौरान जगरनाथ दादा अमर रहे के नारों से पूरा क्षेत्र गुंजायमान रहा। दिवंगत शिक्षा मंत्री का अंतिम दर्शन करने, उन्हें श्रद्धा-सुमन अर्पित करने एवं दुख की इस घड़ी में परिजनों का ढांढस बंधाने को मुख्यमंत्री श्री सोरेन सहित उक्त सभी शीर्ष नेताओं के अलावा दर्जा प्राप्त राज्य मंत्री योगेन्द्र महतो, बोकारो विधायक बिरंची नारायण, सचिव केरवि कुमार, विभिन्न पार्टियों के प्रदेश, जिला के अध्यक्ष, कार्यकर्ता आदि शामिल हुए। इधर, कोयला क्षेत्र के डीआईजी मयूर कन्हैया लाल पटेल, उपायुक्त कुलदीप चौधरी, एसपी चंदन झा, डीडीसी कीर्तिश्री, अपर नगर आयुक्त अनिल कुमार, डीपीएलआर मेनका, एसी सादात अनवर समेत जिला एवं प्रखंड स्तर के पदाधिकारी व कर्मी दायित्वों के निर्वाहन के लिए दिनभर डटे रहे। नेता, अधिकारी व कार्यकर्ता सहित हजारों लोगों ने दिवंगत शिक्षा मंत्री जगरनाथ महतो के अलारगो स्थित पैतृक आवास पर जाकर परिजनों से मुलाकात की और उन्हें सांत्वना दी। इधर, झारखंड के टाइगर राज्य के शिक्षा एवं मद्य निषेध मंत्री दिवंगत जगरनाथ महतो के पार्थिव शरीर का बेरमो अनुमंडल में जगह-जगह लोगों ने रोककर अंतिम दर्शन किया एवं पुष्प अर्पित करते हुए श्रद्धांजलि दी। रांची से आने के क्रम में तुपकाडीह, तांतरी, पिछरी, फुसरो, अमलो चेकपोस्ट, मकोली, चपरी, कोदवाडीह, नावाडीह, पोड़दाग आदि जगहों पर लोगों ने उन्हें अंतिम नमन किया।

- संपादकीय -

सुप्रीम कोर्ट में नेताओं की फजीहत

देश की सर्वोच्च अदालत में भ्रष्टाचार के कथित मामलों में कानूनी राहत की मांग करने पहुंचे विरोधी दलों के नेताओं को फजीहत का सामना करना पड़ा है। सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्र सरकार द्वारा ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) व सीबीआई के दुरुपयोग पर रोक से जुड़ी कांग्रेस के नेतृत्व में 14 विपक्षी दलों की ओर से दाखिल याचिका पर सुनवाई से इनकार कर दिया है। दरअसल, विपक्षी पार्टियों द्वारा जांच एजेंसियों के दुरुपयोग का आरोप लगाया गया था। इसके लिए विपक्षी पार्टियों ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। सुप्रीम कोर्ट से इस मामले में हस्तक्षेप करने की मांग की गई थी। लेकिन, सुप्रीम कोर्ट ने साफ कह दिया कि वह इस मामले में कोई सुनवाई नहीं करने वाला है। नतीजतन, विपक्षी पार्टियों को अपनी याचिका वापस लेनी पड़ गई है। बता दें कि कांग्रेस के नेतृत्व में 14 विपक्षी पार्टियों ने साथ मिलकर सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की थी। उस याचिका के जरिए आरोप लगाया गया था कि केन्द्र सरकार द्वारा जांच एजेंसियों का विपक्षी नेताओं के खिलाफ मनमाने तरीके से इस्तेमाल हो रहा है। कहा गया था कि तत्काल प्रभाव से रोक लगाई जाए। याचिका में गिरफ्तारी, रिमांड और जमानत जैसे मामलों को नियंत्रित करने वाले दिशा-निर्देश जारी करने की मांग की गई थी। लेकिन, सुप्रीम कोर्ट ने न सिर्फ इस याचिका पर सुनवाई करने से ही मना कर दिया, बल्कि राजनीतिक दलों के इन नेताओं को स्पष्ट रूप से कह दिया कि उनके लिए अलग से कोई कानून नहीं बनाया जा सकता। विपक्षी दलों की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने तर्क दिया कि 2013-14 से 2021-22 तक सीबीआई और ईडी के मामलों में 600 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। ईडी द्वारा 121 नेताओं की जांच की गई है, जिनमें से 95 प्रतिशत विपक्षी दलों से हैं। इस पर शीर्ष अदालत ने सिंघवी से पूछा कि क्या हम इन आंकड़ों की वजह से कह सकते हैं कि कोई जांच या कोई मुकदमा नहीं होना चाहिए? कोर्ट का कहना था कि अंततः एक नेता भी मूल रूप से एक नागरिक होता है और नागरिकों के रूप में हम सभी एक ही कानून के अधीन हैं। प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति डीवाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला की पीठ ने कहा कि किसी मामले के तथ्यों से संबंध के बिना सामान्य दिशा-निर्देश देना खतरनाक होगा। लिहाजा, शीर्ष अदालत के रुख को भांपते हुए राजनीतिक दलों की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंधवी ने याचिका वापस लेने की इजाजत मांगी और अंततः यह याचिका वापस ले ली गई। सर्वोच्च अदालत के इस फैसले के बाद भाजपा को विपक्षी दलों के खिलाफ एक बड़ा मुद्दा मिल गया है। सच कहें तो विपक्षी दलों ने भ्रष्टाचार से जुड़े ऐसे मामले में सुप्रीम कोर्ट जाकर खुद अपनी फजीहत करवा ली है।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

हाथी परियोजना के 30 वर्ष

- भूपेंद्र यादव -
केन्द्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री, भारत सरकार।

यह पूरी तरह से स्पष्ट है कि जलवायु परिवर्तन का सामना करने के लिए जैव-विविधता संरक्षण, सर्वोत्तम रणनीतियों में से एक है। जैव-विविधता संरक्षण एक जटिल प्रयास होता है, क्योंकि जैविक समुदाय अपने पर्यावरण से गहरे रूप से जुड़े रहते हैं। कुछ महत्वपूर्ण प्रजातियों का संरक्षण तथा कुछ आवश्यक तथ्यों पर आधारित दृष्टिकोण, चुनौती का मुकाबला करने में सहायता कर सकता है। विश्व स्तर पर लुप्तप्राय एशियाई हाथी (एलीफस मैक्सिमस) का भारत में संरक्षण इसका एक उदाहरण है।

भारत में हाथियों और लोगों के बीच का संबंध गहरा है और दुनिया में विशिष्ट है। भारत में हाथियों की समृद्धि के प्रतीक के रूप में पूजा की जाती है। वे सांस्कृतिक प्रतीक हैं और हमारे धर्म, कला, साहित्य और लोककथाओं के हिस्से हैं। भारतीय महाकाव्य हाथियों के संदर्भों से भरे पड़े हैं। यह भी माना जाता है कि महाभारत को भगवान गणेश ने अपने एक टूटे हुए दांत से लिखा था।

1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद से, हाथियों की आबादी का रुझान, अन्य देशों के विपरीत, अपेक्षाकृत स्थिर रहा है। भारत में वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 जैसे मजबूत कानून हैं, जो हाथियों को उच्चतम कानूनी संरक्षण प्रदान करते हैं, चाहे वे जंगल में हों या मानव देखभाल के तहत हों। वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980, हाथियों के निवास-स्थानों को नुकसान और निवास-स्थानों के क्षेत्रफल में कमी लाने से बचाता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के पिछले 9 वर्षों के कार्यकाल में, भारत ने मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति और नेतृत्व के समर्थन से हाथियों के संरक्षण के लिए एक सक्षम संस्थागत व्यवस्था का निर्माण किया है।

सामूहिक रूप से, हाथी भारत के कुल भू-भाग के लगभग 5% क्षेत्र में पाए जाते हैं। हाथियों की वर्तमान सीमा-क्षेत्र में संरक्षित क्षेत्र और बहु-उपयोग वाले वनों के अन्य रूप शामिल हैं। वे वन क्षेत्रों के बीच आने-जाने के लिए मानव-निवास वाले क्षेत्रों का भी उपयोग करते हैं।

हाथीदांत का अवैध शिकार, जो अफ्रीकी हाथियों के संरक्षण के लिए सबसे बड़ी चुनौती बना हुआ है, भारत में नियंत्रण में है। हालांकि, 1970 और 1980 के दशक में ऐसा नहीं था, जब अवैध हाथी दांत के अंतरराष्ट्रीय अवैध बाजार के लालच में अवैध शिकार के कारण, हमने कई हाथियों को खो दिया था। इन हत्याओं ने हाथियों के संरक्षण के समक्ष एक गंभीर खतरा पैदा कर दिया था और राज्यों तथा केंद्र के बीच सक्रिय समन्वय में, संरक्षण को पुनर्जीवित करने के लिए मिशन-मोड में काम करने की आवश्यकता थी। इस बात को स्वीकार करने के फलस्वरूप, 1992 में महत्वाकांक्षी हाथी परियोजना का शुभारंभ हुआ, जो बाघ परियोजना के अनुरूप था और जिसके तहत बाघों को आबादी को पतन के कगार से वापस लाने में सफलता मिली थी।

हाथी परियोजना, एक केंद्र प्रायोजित योजना है, जो हाथियों के संरक्षण और कल्याण के लिए तकनीकी और वित्तीय सहायता प्रदान करती है। हाथी आरक्षित क्षेत्र, हाथी परियोजना के तहत मौलिक प्रबंधन इकाई हैं। वर्तमान में, पूरे भारत में 80,778 वर्ग किमी में फैले 33 हाथी आरक्षित क्षेत्र हैं। वर्ष 2022 में भारत में हाथी परियोजना के 30 वर्ष पूरे हुए हैं।

हाथी परियोजना ने हाथी संरक्षण के प्रयासों को गति दी है। रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थानों पर पिछले दो वर्षों के दौरान दो नए हाथी आरक्षित क्षेत्र बनाए गए हैं। दुधवा और उत्तर प्रदेश के आसपास के क्षेत्रों में अधिसूचित तराई हाथी आरक्षित क्षेत्र का उद्देश्य, भारत और नेपाल के बीच सीमा-पार के हाथियों के प्रबंधन में लंबे समय से चल रही समस्याओं का समाधान करना है। तमिलनाडु के दक्षिणी-पश्चिमी घाट के पहाड़ों में अगस्तियारमलाई हाथी आरक्षित क्षेत्र, पेरियार और अगस्तियारमलाई के बीच संपर्क बहाल करने की दिशा में गति प्रदान करेगा।

हाथियों के संरक्षण और मानव-हाथी संघर्ष को कम करने के लिए, गलियारों के महत्व को स्वीकार करते हुए, हाथी परियोजना के अंतर्गत पूरे भारत में, चिन्हित किये गए हाथी गलियारों के लिए, भूभाग सत्यापन का कार्य किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि कुछ महत्वपूर्ण हाथी गलियारों, जैसे उत्तराखंड में चिल्ला-मोतीचूर गलियारे, केरल में तिरुनेली-कुदरकोट गलियारे और कुछ अन्य को सफलतापूर्वक बहाल कर दिया गया है। पहली बार, ओडिशा में एक महत्वपूर्ण गलियारे को वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के प्रावधानों के तहत एक संरक्षण आरक्षित क्षेत्र के रूप में अधिसूचित किया गया था।

ट्रेन से हाथियों की टक्कर के मुद्दे को हल करने के लिए रेलवे तथा पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की बैठकें निरंतर हो रही हैं। समस्या के समाधान के लिए दोनों मंत्रालय, राज्य के वन विभागों और अनुसंधान संस्थानों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

मानव-हाथी संघर्ष सबसे बड़ी चुनौती

भारत में हाथियों के संरक्षण की दिशा में सबसे महत्वपूर्ण चुनौती है - मानव-हाथी संघर्ष। सरकार इस समस्या के गंभीरता को स्वीकार करती है और संघर्षों को कम करने के लिए लोगों के साथ खड़ी है। वन्य-जीवों के कारण होने वाले फसल नुकसान को शामिल करने के लिए, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना जैसी नई पहलों का विस्तार किया गया है, ताकि प्रभावित किसानों को समय पर मुआवजे का भुगतान किया जा सके। संघर्ष के प्रति प्रतिक्रिया अवधि में और समय पर अनुग्रह राशि के भुगतान में, सुधार के प्रयास किए जा रहे हैं।

भारत तेजी से विकास कर रहा है और आर्थिक प्रगति कर रहा है, ऐसे में समय की मांग है कि प्रकृति-संस्कृति संबंधों को बनाए रखा जाये। हमारी पौराणिक कथाएं, कला, धर्म और विरासत प्रकृति के साथ एकता के सद्गुणों पर जोर देती हैं। हाथी संरक्षण संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के लिए, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय और असम वन विभाग भारत में हाथी परियोजना के 30 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में 'गज उत्सव' मनाएंगे।

'गज उत्सव', इस शानदार प्रजाति के संरक्षण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का सामूहिक रूप से संकल्प लेने का एक मंच होगा।

वसुधा बिलखय

- शम्भुनाथ-

वसुधा बिलखय बैसि क'
देखि कपूतक काज।
केहि मुख सं निज सुत कहय
कहति होय छै लाज।।

अहंकार मद पाबि क'
हतय बन्धुके नित्य ।
मानवता के ताख धरि
करय अधम कुकृत्य।।
भौतिक सुख के चाह मे
भेल आँखि छै बन्द।
पैशाचिक नर्तन करय
रक्तक लागल गन्ध।।

करय ने काज विवेक सं
बाँचल नहि सम्बन्ध।
कामुकता चढि माथ पर
हिय के कैलक अन्ध।।

धर्म जाति मे भेद कहि
ताण्डव होइछ नित्य।
सत्ता के हित साध मे
बुझय न की औचित्य।।

वनिता दुहिता के कहय
माता के नहि मान।
कुहकि रहल जननी विकल
घोंटि अश्रु अपमान।।

अहंकार मद लोभ मे
डूबल जन आकंठ।
पुरय न चाह मनुक्ख केर
तदपि बनल अछि चंठ।।

पुरय मनोरथ मानवक
यदि मन हो संतोष।
सतति आत्मवश मे रहय
रहय सुकर्मक जोश।।

निदेशक प्रभारी ने इस्पातकर्मियों का किया उत्साहवर्द्धन

बोकारो स्टील प्लांट : 2022-23 में प्लांट के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पर जताई प्रसन्नता

संवाददाता

बोकारो : वित्तीय वर्ष 2022-23 में बोकारो स्टील प्लांट द्वारा अपनी स्थापना काल से अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सभी विभागों ने अपनी- अपनी भूमिका निभाई है। बीएसएल के निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश ने मंगलवार को अपने वरिष्ठ सहयोगियों के साथ सामग्री प्रबंधन, वित्त एवं लेखा, परियोजनाएं, कार्मिक एवं प्रशासन, नगर प्रशासन, मानव संसाधन विकास आदि विभागों का दौरा कर कर्मियों को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी। निदेशक प्रभारी श्री प्रकाश ने कर्मियों को नए वित्त वर्ष में प्रदर्शन में उत्कृष्टता के इस क्रम को जारी रखने के साथ ही सेफ़्टी एवं गुणवता पर विशेषतौर पर फोकस करने का आह्वान किया। उन्होंने इस दौरान अधिकारियों एवं कर्मियों से उनके विभाग से संबन्धित जानकारी भी ली। उल्लेखनीय है कि इसके पूर्व बीएसएल की इस उपलब्धि पर निदेशक प्रभारी ने संयंत्र के विभिन्न विभागों का दौरा कर अधिकारियों, कर्मियों एवं संविदा कर्मियों समेत पूरी टीम बीएसएल को बधाई दी।

इधर, सेलस्तरीय प्रतियोगिताओं में उम्दा प्रदर्शन हेतु बीएसएल टीमें सम्मानित

सेल स्वर्ण जयंती के मौके पर विगत दिनों सेल स्तर पर आयोजित विभिन्न स्पधाओं में बीएसएल की टीमों ने कई पुरस्कार जीते। बीएसएल की टीमें सेल स्वर्ण जयंती बैडमिंटन चैंपियनशिप, सेल स्वर्ण जयंती फुटबॉल चैंपियनशिप तथा सेल स्वर्ण जयंती क्रिकेट चैंपियनशिप में विजेता रही, जबकि सेल स्वर्ण जयंती वॉलीबॉल चैंपियनशिप में बीएसएल की टीम रनर-अप रही। इन उपलब्धियों के लिए बुधवार को इन टीमों को अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) राजन प्रसाद तथा अधिशासी निदेशक (माइंस) जयदीप दासगुप्ता द्वारा सम्मानित किया गया। इस मौके पर मुख्य महाप्रबंधक (कार्मिक) हरि मोहन झा, महाप्रबंधक (संपर्क एवं प्रशासन) एनए सैफी, महाप्रबंधक (नगर प्रशासन) एके अविनाश, वरीय प्रबन्धक सुभाष रजक तथा अन्य अधिकारी व कर्मी उपस्थित थे।

उद्घाटन बोकारो संगीत कला अकादमी में नवनिर्मित रंगमंच का डीआई ने किया शुभारंभ

इस्पातनगरी में अब नए रंगमंच पर सजने लगी फनकारों की महफिल

संवाददाता

बोकारो : बोकारो में विगत दशक से भी अधिक समय से संगीत व कला की विविध विधाओं का अलख जगा रही बोकारो संगीत कला अकादमी को नए रंगमंच की सौगात मिली है। अकादमी के वार्षिकोत्सव के अवसर पर अकादमी प्रांगण में इस नवनिर्मित रंगमंच का उद्घाटन बोकारो स्टील प्लांट के निदेशक प्रभारी अमरेंदु प्रकाश ने किया। बता दें कि शुरुआत में यहां खुले रंगमंच का निर्माण किया गया था, जिस पर कई कार्यक्रम हो चुके हैं। अब नए रंगमंच पर फनकारों की महफिल सजेगी और संगीत-कला प्रशिक्षु भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकेंगे। नए मंच पर सुंदर प्रकाश व्यवस्था, माइकिंग, आकर्षक पार्श्व सज्जा सहित हर आवश्यक सुविधाएं बहाल की गई हैं।

उद्घाटन के अवसर पर इसमें मुख्य रूप से वृंदावन बंगला लोक नृत्य, सृजन नृत्य नौ रंग, भरतनाट्यम शिवतांडव, उड़ीसा एवं झारखंड के लोक नृत्य, गायन तान तरंग, श्री राम वंदना आदि की प्रस्तुति की गई। अकादमी की सांस्कृतिक सचिव श्रीमती श्वेता कुमार के निर्देशन में एकेडमी के छात्र-छात्राओं तथा गुरुजनों ने भी अपनी प्रस्तुतियां दीं।

चार साल के अंतराल पर आयोजित इस कार्यक्रम में बोकारो स्टील प्लांट के अधिशासी निदेशक आर. महापात्रा व अमिताभ श्रीवास्तव, आर के रथ (ईडी, एसआरयू), कार्यवाहक ईडी बीएस पोपली सहित बड़ी संख्या में शहरवासी मौजूद रहे। अंत में अकादमी के महासचिव अंजनी कुमार अविनाश ने धन्यवाद ज्ञापन किया। आयोजन की सफलता में अकादमी के कोषाध्यक्ष रतनलाल सिंह, दिव्यांशु पंत, बीजू पी. का विशेष सहयोग रहा।

नाट्यकला का भी प्रशिक्षण जल्द

अकादमी के प्रशासक अरुण सिन्हा ने बताया कि बोकारो संगीत कला अकादमी में संगीत एवं कला की सभी विधाएं बेहद कम शुल्क पर सिखाई जाती हैं। पिछले 31 वर्षों से बोकारो में भारतीय परंपरागत संगीत को संरक्षित रखने और इसे विस्तृत करने में इसका योगदान काफी बड़ा रहा है। गरीब एवं एवं आदिवासी बच्चों को मुफ्त शिक्षा दी जाती है। अब नाट्यकला की भी पढ़ाई यहां प्रारंभ की जाएगी।

डीपीएस बोकारो के डॉ. गंगवार बने मोस्ट इफेक्टिव प्रिंसिपल

सीएससी ओलंपियाड - देशभर में सर्वाधिक बच्चों की सफलता के लिए मिला राष्ट्रीय सम्मान

संवाददाता

बोकारो : दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस), बोकारो की उपलब्धियों में एक और नया अध्याय जुड़ गया है। भारत सरकार की डिजिटल इंडिया योजना के तहत आयोजित सीएससी (कॉमन सर्विस सेंटर) ओलिंपियाड में देशभर से सर्वाधिक विद्यार्थियों की सफलता के लिए विद्यालय के प्राचार्य डॉ. ए. एस. गंगवार को मोस्ट इफेक्टिव प्रिंसिपल अवार्ड 2023 से नवाजा गया है। नई दिल्ली में आयोजित नौवें ग्लोबल एजुकेशन एंड स्किल समिट लीडरशिप अवार्ड 2023 समारोह के दौरान उन्हें यह पुरस्कार मिला।

डॉ. गंगवार पूरे झारखंड से यह प्रतिष्ठित अवार्ड पाने वाले एकमात्र प्राचार्य हैं। डॉ. गंगवार ने इस उपलब्धि को विद्यार्थियों और शिक्षकों सहित पूरे विद्यालय परिवार की मेहनत तथा सभी के समेकित सहयोग का परिणाम बताया। उन्होंने कहा कि सभी प्रयास से ही डीपीएस बोकारो निरंतर उपलब्धियों की नई गाथाएं रच रहा है। उल्लेखनीय है कि विद्यालय

पाठ्यक्रम पर आधारित सीएससी ओर्लंपियाड में डीपीएस बोकारो से देशभर में सर्वाधिक कुल 9 छात्र-छात्राओं ने उत्कृष्ट सफलता पाई है। कक्षा तीन से 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए आयोजित इस परीक्षा में पूरे झारखंड से केवल दो विद्यार्थियों को रैंक- 1 मिला और दोनों ही इसी स्कूल के रहे। इसी प्रकार राज्यभर में रैंक - 2 हासिल करने वाले पांच विद्यार्थियों में से चार तथा रैंक - 3 वाले पांच छात्र-छात्राओं में से तीन अकेले डीपीएस बोकारो के ही बच्चे थे। इन विद्यार्थियों को कुल 43,200 रुपए की वार्षिक छात्रवृत्ति मिलेगी।

कृषि व वनोपज से जुड़े ग्रामीणों को बनाएं आत्मनिर्भर : उपायुक्त

सहकारी संघ से सदस्यों को जोड़ने हेतु अभियान चलाने का दिया निर्देश

संवाददाता
बोकारो : समाहरणालय स्थित सभागार में उपायुक्त सह- मुख्य कार्यकारी पदाधिकारी कुलदीप चौधरी ने सिद्धो-कान्हू कृषि एवं वनोपज जिला सहकारी संघ लि. बोकारो की निदेशक पर्षद की पहली बैठक की। बैठक में जिला वन प्रमंडल पदाधिकारी रजनीश कुमार, अपर समाहर्ता सादात अनवर, जिला सहकारिता पदाधिकारी श्रीमती श्वेता गुड़िया, संबंधित विभागों के पदाधिकारी, विभिन्न पैक्सों के अध्यक्ष व सदस्य आदि उपस्थित थे। उपायुक्त ने कृषि आधारित कार्यों से जुड़े अधिकाधिक लोगों को स्वनिर्भर बनाने तथा उन्हें रोजगार उपलब्ध कराने हेतु जिला सहकारिता पदाधिकारी को अभियान चलाकर संघ में सदस्यों को जोड़ने का निर्देश दिया।

बैठक में सिद्धो-कान्हो कृषि एवं वनोपज जिला सहकारी संघ लि. के माध्यम से किसानों को जोड़कर उनकी आय बढ़ाने, जिले में कृषि उत्पादों में बढ़ोतरी की संभावना, कोल्ड स्टोरेज, प्रोसेसिंग यूनिट आदि के अधिष्ठापन की जरूरत पर भी चर्चा हुई। जेएसएलपीएस की डीपीएम अनिता केरकेट्टा ने जिले में महुआ, कटहल का वैल्यू एडेड करने, स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से सहयोग व प्रशिक्षण देने की बात कहीं। वहीं, जिला कृषि पदाधिकारी ने लेमन ग्रास, मशरूम, टमाटर जैसे उत्पादों का वैल्यू एडेड करने को कहा। एलडीएम संजीव कुमार ने कृषि अधारभूत संरचना के विकास को लेकर अनुदानित दर पर किसानों को ऋण उपलब्ध कराने, नाबार्ड के डीडीएम फिलेमन बिलांग ने कोल्ड स्टोरेज निर्माण की बात कही। उपायुक्त ने सभी संबंधित विभागों को अगली बैठक में प्रस्ताव तैयार कर पीपीटी माध्यम से प्रदर्शित करने को कहा।

बैठक में उपस्थित जिला वन प्रमंडल पदाधिकारी रजनीश कुमार ने कहा कि सिद्धो-कान्हो कृषि एवं वनोपज योजना सरकार की महत्ती योजना है। 75 फीसदी आबादी कृषि पर आधारित है। हमें इसे समृद्ध करना है। उन्होंने महुआ उत्पादन से जुड़े किसानों की आय में बढ़ोतरी को लेकर कई सुझाव दिये, ताकि इससे जुड़े किसानों की आय में बढ़ोतरी हो। बैठक में बेरमो एवं चंदनकियारी के विधायक प्रतिनिधि क्रमशः मिथिलेश तिवारी व हेमंत शेखर ने भी अपने सुझाव दिये।

नाबालिग का विवाह कराने पर हो सकती है दो साल की जेल

बोकारो थर्मल : जारंगडीह के राजकीय मध्य विद्यालय में बाल अधिकार संरक्षण जागरूकता अभियान बाल अधिकार संरक्षण कार्यकर्ता सह मनोवैज्ञानिक डॉ. प्रभाकर कुमार द्वारा चलाया गया। डॉ. प्रभाकर ने बाल अधिकारों को परिभाषित करते हुए बताया कि किसी भी नाबालिग की शादी करवाना, करना या किसी तरह से सहायता करना गैरजमानतीय कानूनी अपराध है। नाबालिग विवाह से शिक्षा के अधिकार, बच्चे के विकास, मानसिक शक्ति, बच्ची के शारीरिक स्वास्थ्य व समाज पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ऐसा करने वाले को बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम, 2006 के तहत दो वर्ष के कारावास की सजा या एक लाख रुपए जुर्मानाअथवा दोनों भुगतना पड़ सकता है। 18 वर्ष से कम आयु की लड़की एवं 21 वर्ष से कम आयु के लड़के का विवाह बाल विवाह की श्रेणी में आते हैं। मौके पर स्कूल के प्रधानाध्यापक तिलेश्वर राम, शिक्षक प्रेम कुमार, रीता कुजूर, तमिल मणि आदि मौजूद रहे।

अध्यात्म भागवत ज्ञान संग जीवन का मर्म समझा गए चिन्मय मिशन गोवा के आचार्य

ईश्वर पाने की पहली सीढ़ी है सत्संग : स्वामी सुघोषानंद

संवाददाता
बोकारो : चास स्थित चिन्मय मिशन में भागवत ज्ञान कथा यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशेष रूप से पहुंचे चिन्मय मिशन, गोवा केंद्र के आचार्य स्वामी सुघोषानंद सरस्वती ने भगवान कृष्ण की बाल लीला से लेकर महाभारत और गीता-उपदेश के प्रसंग तक का सुरुचिपूर्ण तरीके से संगीतमय वर्णन किया। प्रत्येक दिन अलग-अलग प्रसंगों की चर्चा करते हुए उन्होंने इसके जरिए मानव-जीवन की सफलता का मर्म भी समझा दिया। उन्होंने कहा कि सत्संग ईश्वर तक पहुंचने की पहली सीढ़ी है। सत्संग से सद्बुद्धि आती है और आत्मज्ञान का विकास होता है। उन्होंने गीता के भाव समझाते हुए लोगों को लोभ-लालच, ईर्ष्या, घृणा आदि से दूर रहकर ईश्वर द्वारा जो मिलता है, उस पर संतोष करने का संदेश दिया।

भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करते हुए स्वामीजी ने कहा कि भगवान कृष्ण के हर रूप भक्ति भाव से सराबोर और बड़ा ही मनमोहक है। भगवान श्रीकृष्ण ने पृथ्वी पर मौजूद राक्षस एवं सभी के अंदर के दुर्गुणों का नाश किया और बुराइयों के अंत किया। उन्होंने कहा कि भक्ति के साथ ज्ञान का समावेश होने से भक्तों से भगवान और प्रसन्न हो जाते हैं। प्रभु को कभी भी अभिमान या घमंड से प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

संगीतमय भागवत प्रवचन के अंतिम दिन उन्होंने कंस-वध का प्रसंग सुनाया। कहा कि श्री कृष्ण ने मथुरा जाकर दुराचारी कंस का नाश कर समाज में धर्म, शांति की स्थापना की। भगवान ने अपने हर रूप में समाज की शिक्षा देने का कार्य किया। उनके उपदेशों को आत्मसात करने से ही मानव-जीवन सफल हो सकता है। रामलला की शोभायात्रा के साथ कार्यक्रम का विधिवत समापन हुआ। इस अवसर पर स्वामी सुघोषानंद के साथ साथ स्वामी राघवानंद सरस्वती, सुमन सुहासरिया, संदीप तिवारी, पंकज कुमार मिश्रा, राजेंद्र प्रसाद सिंह, बिपिन बिहारी मिश्रा, सुनील कुमार तिवारी, सुनील जायसवाल, देवेश त्रिपाठी, संजीव कुमार सिंह सहित चिन्मय मिशन के सभी सदस्य एवं चास बोकारो के भक्त उपस्थित थे। संगीतमय भागवत के दौरान स्वामीजी के साथ तबले पर रूपक झा ने कुशल संगत की।

हफ्ते की हलचल

महावीर जयंती पर रक्तदान शिविर का आयोजन

बोकारो : महावीर जयंती पर बोकारो के सेक्टर-2 स्थित जैन स्कूल प्रांगण में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी ब्लड सेंटर के द्वारा रक्त संग्रहित किया गया। डॉ. यू. मोहंती की देखरेख में श्वेता जैन, रश्मि जैन, नितेशा जैन, योगेश कुमार जैन, आकाश अग्रवाल, हिमांशु बांठिया, महावीर कुमार रवानी, कुमार शुभम, अनिल चौधरी ने रक्तदान किए। सफल आयोजन में संजय शर्मा, डॉ. महेंद्र जैन, अजय जैन, सिद्धार्थ जैन, सज्जन जैन व विनय बैद आदि लगे रहे। यह जानकारी मीडिया प्रभारी सुरेश बोथरा ने दी।

ओडिशा के राज्यपाल से मिले अनिल अग्रवाल

बोकारो : अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा के अध्यक्ष अनिल अग्रवाल ने ओडिशा के राज्यपाल प्रोफेसर गणेशी लाल से शिष्टाचार मुलाकात कर उनसे विभिन्न विषयों पर चर्चा की। उन्हें संगठन के कार्यों के बारे में बताया। उन्होंने संगठन के द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की। श्री अग्रवाल ने संस्था के एक कार्यक्रम में उन्हें झारखंड आने का भी न्योता दिया, जिसे उन्होंने सहज स्वीकार करते हुए अपनी सहमति दी। श्री अग्रवाल ने बताया कि अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा के संगठन कार्य हेतु वह ओडिशा दौरे पर गए थे और इसी इसी क्रम में उनसे से मिलना हुआ।

डीपीएस चास में स्पेशल एसेंबली का आयोजन

बोकारो : डीपीएस चास में स्पेशल एसेंबली का आयोजन किया गया। इसमें विद्यार्थियों को स्कूल के नियमों और अनुशासन के बारे में बताया गया। विद्यालय की चीफ मेंटर डॉ. हेमलता एस. मोहन ने क्लास एसेंबली में भाग लेने वाले सभी बच्चों को नए सत्र की शुरूआत के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि अनुशासन व सच्चा आचरण व्यक्तित्व को महान बनाता है, इसलिए डीपीएस चास में छात्र जीवन से ही बच्चों को अनुशासन व सच्चे आचरण का पाठ पढ़ाया जाता है। कार्यवाहक प्राचार्य दीपाली भुस्कुटे ने कहा कि विद्यार्थियों को पढ़ाई लिखाई के अलावा अपने अच्छे डेवलपमेंट के लिए हर एक्टिविटी में भाग लेना चाहिए। इससे मानसिक और शारीरिक दोनों का ही विकास होगा। क्लास एसेंबली का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया। मौके पर संजीव तिवारी, विशाल बंसल, शिल्पी कुमारी, शुभोजीत मिश्रा सहित डीपीएस चास परिवार के अन्य सदस्य मौजूद रहे।

वीर रघुनाथ महतो का मना शहादत दिवस

बेरमो : गिरिडीह सांसद के मकोली स्थित आवासीय कार्यालय में चुआड़ विद्रोह के महानायक अमर शहीद वीर रघुनाथ महतो का शहादत दिवस आजसू फुसरो नगर समिति की ओर से मनाया गया। इस दौरान वीर रघुनाथ महतो की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर उन्हें पार्टी कार्यकताओं ने श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर अपने संबोधन में दीपक महतो ने कहा कि शहीद रघुनाथ महतो का जीवन समाज के लिए अनुकरणीय रहा है। उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ चुआड़ विद्रोह किया था। उन्होंने अपना गांव, अपना राज, दूर भगाओ विदेशी राज का नारा दिया था। विद्रोह करने वालों में कुड़मी, महतो, भूमिज, बाउरी और अन्य समुदाय शामिल थे। नगर अध्यक्ष महेश देशमुख ने कहा कि प्रथम चुआड़ विद्रोह के नायक शहीद रघुनाथ 1778 ई में अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ते हुए शहीद हो गए। उनका जीवन युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है। कार्यक्रम में सांसद प्रतिनिधि दीपक महतो, नगर अध्यक्ष महेश देशमुख, सांसद प्रतिनिधि अशोक चौहान, बेरमो प्रखंड कार्यकारी अध्यक्ष कृष्णा महतो, प्रखंड उपाध्यक्ष बीरू हरि, छात्र संघ सचिव विक्की महतो, यूनियन नेता बबलू महतो, जसवंत महतो, सुमीत पासवान रोहित चौधरी आदि उपस्थित थे।

लंदन जैसी होंगी झारखंड की सड़कें

विकास-पथ... औद्योगिक और पर्यटन विकास का रास्ता बनेंगी छह सड़कें

विशेष संवाददाता

रांची : औद्योगिक और पर्यटन विकास की गति तेज करने के लिए झारखंड में लंदन जैसी अंतरराष्ट्रीय स्तर और गुणवत्ता की की छह सड़कें बनेंगी। ये सड़कें विकास का नया रास्ता बन तरक्की की नई मंजिल की तक पहुंचाने में सहयोगी बनेंगी। जानकारी के अनुसार पारसनाथ, रजरप्पा और देवघर होली टूरिस्ट कॉरिडोर से जुड़ेंगे। इसकी सैद्धांतिक सहमति सरकार ने पिछले वित्तीय वर्ष में दे दी थी। सरकार अब इसके लिए डीपीआर बनाने का काम शुरू करने जा रही है। फिर इसे केंद्र सरकार के पास स्वीकृति के लिए भेजी जायेगी। केंद्र की मंजूरी मिलते ही इन सड़कों को निर्माण कार्य इसी साल शुरू हो जाएगा। यह केंद्र और राज्य संपोषित स्कीम होगी। इसके तहत राज्य के कई पर्यटन एवं धार्मिक स्थलों की यात्रा सुगम होगी तथा एक- दूसरे से जुड़ जाएंगे। इससे न केवल राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के पर्यटकों को आने-जाने में सुविधा होगी, बल्कि पर्यटन से जुड़े व्यापार एवं अन्य औद्योगिक विकास होंगे। ये सड़कें फोरलेन कॉरिडोर होंगी, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर की होंगी। इनके बन जाने से कम समय में अधिक दूरी तय की जा सकेगी।

जानिए... कहां और कैसे होंगे फोर लेन हाइवे

ईस्ट-वेस्ट कॉरिडार : दूरी 393 किमी. मुड़ीसेमर से चतरा- बरही- बेंगाबाद - मधुपुर- सारठ- पालाजोरी भाया दुमका।

ईस्टन कॉरिडोर : दूरी 121 किमी. साहेबगंज से जामताड़ा, निरसा- सिंदरी-चंदनकियारी भाया चांडिल।

नॉर्थ-साउथ कॉरिडार : दूरी 275 किमी. झमुरीतिलैया से एनएच-2, विष्णुगढ. पेटरवार- कसमार- बरलंगा- सिल्ली- रड़गांव- सरायकेला- चाईबासा- जैतगढ, भाया ओड़शि सीमा।

सेंट्रल कॉरिडोर : दूरी 140 किमी. रांची से बुढमू- टंडवा- चतरा- हंटरगंज भाया डोभी बिहार सीमा।

टूरिस्ट कॉरिडोर : 270 किमी. सिल्ली रंगामाटी रोड से सारजमडीह- तमाड़- खूंटी, गोविदुपर- सिसई, घाघरा-नेतरहाट- गारू- सरयू- लातेहार हेरहंज- बालूमाथ- मैक्लुस्कीगंज भाया चामा मोड़।

होली टूरिस्ट कॉरिडोर : 170 किमी. रांची से ओरमांझी- गोला-रजरप्पा- डुमरी, गिरिडीह भाया देवघर।

पारसनाथ और बैद्यनाथ धाम को जोड़ने की तैयारी

आधिकारिक सूत्रों के अनुसार सरकार ने राज्य के दो बड़े पर्यटन एवं धार्मिक स्थल को आपस में जोड़ने का मन बनाया है। इसमें गिरिडीह का पारसपाथ और देवघर शामिल है। इसकी दूरी कम करने के साथ यहां पहुंचने वाले राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों को लुभाने के लिए होली टूरिस्ट कॉरिडोर के रूप में विकसित करने का प्लान बनाया है। इस प्रोजेक्ट में राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रजरप्पा का छिन्नमस्तिके मंदिर भी जुड़ेगा, जहां पूरे देश से श्रद्धालु जुटते हैं। होली टूरिस्ट कॉरिडोर की दूरी करीब 170 किमी होगी, जो रांची से शुरू होकर ओरमांझी- गोला- रजरप्पा- डुमरी होते हुए गिरिडीह भाया देवघर तक तक जाएगी। इससे रांची से रजरप्पा, देवघर और गिरिडीह की पारसनाथ पहाड़ी की यात्रा सुगम हो जाएगी।

किसान हमारे अन्नदाता, फसल की उपज का दें उन्हें मिलना चाहिए मूल्य : जिलाधिकारी

सतीश कुमार झा

सीतामढ़ी : बिहार राज्य फसल सहायता योजना अन्तर्गत रबी फसल गेहूं की कटनी प्रयोग का निरीक्षण जिला पदाधिकारी मनेश कुमार मीणा ने डुमरा प्रखंड की मुरादपुर पंचायत ग्राम मझौलिया में किया। जिला पदाधिकारी मनेश कुमार मीणा किसानों के खेत पहुंचे। गौरतलब है कि फसल कटाई प्रयोग उत्पादन एवं उपज दर, क्षति के दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण है। इसके अंतर्गत कटनी का प्रयोग संभाविक रैंडम पद्धति से निकालकर प्लॉट का चयन किया जाता है, जिसमें प्लॉट का कट साइज 10 मीटर लंबा एवं 5 मीटर चौड़ा यानी कुल 50 वर्ग मीटर में किया जाता है। 50 वर्ग मीटर में किए गए कटनी में कुल 17 किलो 500 ग्राम गेंहू का उपज पाया गया, जिसका प्रति हेक्टेयर 35 क्विंटल उत्पादन का आकलन हुआ।

इस क्रम में जिलाधिकारी ने स्थानीय किसानों से बात कर उनकी समस्यायों की जानकारी ली एवं उनसे कृषि योजनाओं एवं कार्यक्रमों का फीड बैक भी लिया। उन्होंने कहा कि किसान हमारे अन्नदाता हैं। किसानों को उनकी उपज का सही मूल्य मिले और उनकी आय में वृद्धि हो, इसे लेकर पूरी गंभीरता से काम किया जा रहा है। इस अवसर पर लखी राम मुर्मू जिला सांख्यिकी पदाधिकारी, जिला कृषि पदाधिकारी, अवर सांख्यिकी पदाधिकारी रणधीर कुमार, अमोद कुमार प्रखंड सांख्यिकी पदाधिकारी, प्रखंड कृषि पदाधिकारी अविनाश कुमार, कृषि समन्वयक रणकेशरी सिंह आदि उपस्थित थे।

रेल सेवाओं में सुधार के जरिए भारत-नेपाल संबंधों में बेहतरी की कोशिश, ट्रेनों के समय में बदलाव

मधुबनी : भारत और नेपाल के बीच के संबंधों को रेल सेवाओं में सुधार के जरिए बेहतरी लाने की कोशिश की जा रही है। नेपाल रेलवे ने दोनों देश के नागरिकों और यात्रियों की मांग व सुविधा के लिहाज से नेपाली ट्रेन के परिचालन की समय-सारिणी में बदलाव किया है।

आधिकारिक सूत्रों के अनुसार दोनों देश के यात्रियों की लंबे समय से मांग व सुविधा के लिहाज से टाइम टेबल में बदलाव कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि दोनों देश के यात्रियों के सामाजिक व आर्थिक लाभ को देखते हुए एक जोड़ी ट्रेन के लिए फिर से प्रस्ताव सरकार को भेजा गया है, ताकि यात्रियों को ज्यादा से ज्यादा लाभ हो सके। साथ ही आने वाले 6 महीने के अंदर नेपाली रेललाइन पर मालगाड़ी चलाने का भी प्रस्ताव सरकार को भेजा गया है। सरकार की ओर से हरी झंडी मिलते ही यात्री सुविधा विस्तार के साथ नेपाली रेल मालगाड़ी का परिचालन किया जा सकता है। इससे व्यापारी वर्ग को काफी फायदा होगा और भारत-नेपाल के बीच व्यापारिक संबंध भी और मजबूत होगा। उन्होंने बताया कि यात्रियों की सुविधा और व्यापारिक व्यवस्था को सुगम बनाने के लिए लगातार काम किया जा रहा है और यह प्रयास आगे भी अनवरत रूप से जारी रहेगा। 14 अप्रैल से जयनगर से भारतीय समय के अनुसार सुबह 9:15 बजे ट्रेन खुलेगी। ट्रेन 10:55 बजे जनकपुरधाम पहुंचेगी। शाम में 4:45 बजे से दूसरी ट्रेन का परिचालन होगा। इसी तरह कुर्था से 7 बजे सुबह में और जनकपुरधाम से भारतीय समय के अनुसार 7:15 बजे ट्रेन खुलेगी जो 9 बजे पहुंचेगी। शाम में जनकपुरधाम से 2:45 बजे ट्रेन खुलेगी जो 4:15 बजे जयनगर पहुंचेगी।

समर्पण- मानसिक शांति का माध्यम

गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली

मन की शांति सबसे बड़ा वरदान है और यह वरदान निरंतर और निरंतर साधना और तप के द्वारा प्राप्त होता है। इस मार्ग में गुरु आपके सहयोगी हैं, मित्र हैं। आप तो बस एक बालक बनकर क्रिया करते रहो। आपके भीतर जो शक्ति का अजस्र भंडार है, प्रवाह है, उस प्रवाह को खोल दो। आप के बढ़ते कदमों को कोई रोक नहीं पायेगा। संसार में हर व्यक्ति जो काम कर रहा है, उसका उद्देश्य शांति प्राप्त करना है। चाहे वह कितनी भी तीव्र गति से उपद्रवी क्रिया क्यों न हो, पर वह क्रिया शांति की ओर ले जाने वाली ही होती है। सर्विस इंडस्ट्री के लोग 'पीस ऑफ माइंड' प्रदान करने का बिगुल बजाते रहते हैं। यह उनका सबसे बड़ा दावा एवं पक्का वादा भी होता है। मूल बात है कि शांति के रास्ते में इतनी क्रांति क्यों होती है? मनुष्य जन्म पर जन्म लेता रहता है, क्रिया-प्रतिक्रिया चलती रहती है और उसका लक्ष्य परमात्मा में विसर्जित होना है। क्या कारण है कि इतने सारे संत-महात्मा गुरु सालों से शांति को प्राप्त करने का ज्ञान दे रहे हैं, फिर भी आम जनता को शांति प्राप्त करने के लिए संघर्षपूर्ण पथ पर चलने के अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं है। इसका उत्तर है कि विचार सबके पास सहजता से उपलब्ध है, मगर फिर भी जब तक वह विचार मन की भूमि में स्वतः नहीं उपजता है, वह विचार निजी नहीं होता है। बल्कि, ऋण की भांति मन पर एक नया बोझ उत्पन्न करता है। उस बोझ को कम करने के लिए या फिर उसे समझने के लिए फिर से एक नए गुरु, नई विचारधारा, नवीन सोच का आश्रय लेना पड़ता है, परंतु वह भी एक और नए ऋण की भांति होता है।

विचार बोझ इतना? मन पर इन विचारों के बढ़ते बोझ को कम करने का एकमात्र तरीका मन की शांति दिखाई देती है, जो अब और लुप्तप्राय सी होती जाती है। नए नए फामूर्ले अपनाए जाते हैंष कोई सांसों को धौंकनी की तरह फेंकता है, तो कोई काम में डूबता जाता है। किसी जीवन में नए संबंध शुरू होते हैं, परंतु उद्देश्य शांति पर अपनी पकड़ कसनी है।

शांति की तुलना शून्य से

शांति की तुलना शून्य से की जा सकती है। यदि मन की शांति रसायन हो तो वह न्यूट्रल होगी, जहां क्रिया-प्रतिक्रिया की संभावनाएं समाप्त हो जाती हैं। गणित में किसी प्रश्न के हल तक पहुंचने के लिए संख्याओं को जोड़-घटाव, गुणा-भाग की असंख्य उठापटक के दौर से गुजरना पड़ता है। यही हालत मन का भी है। इसे भी विचार हर समय गतिमान रखते हैं और फिर ध्यान की स्थिति में क्षणिक शांति रेगिस्तान में प्यास से तड़प रहे पथिक को गंगाजल की एक घूंट की तरह मालूम पड़ते हैं।

मन का लक्ष्य- शांति

यह शांति ध्यान की उपलब्धि नहीं है, परंतु विचारों में ब्रेक लगने का परिणाम है। जैसा विचार, वैसा व्यवहार, जैसा व्यवहार, वैसा संसार। विचार की अनिवार्यता को नकारा नहीं जा सकता है। निर्विचार अवस्था अर्थात संत महात्मा तुरीय ज्ञान अवस्था को प्राप्त मन की शांति सराहनीय उपलब्धि है। परंतु, इस उपलब्धि को प्राप्त करने का उपक्रम उपद्रव को निमंत्रण है। शून्यता अर्थात शिव की दशा में पहुंचना मन का लक्ष्य है, उसका स्वभाव नहीं। मन का स्वभाव चंचल है। सागर में लहर की तरह हर लहर उसे कुछ आगे धकेल देती है। सभ्यता ऐसी ही आगे बढ़ रही है, ऐसे ही आगे बढ़ती रहेगी। मुश्किल बात है इस गतिशीलता में शांति को खोजना। हां, वह मिलेगा मगर क्षणिक रहेगा, क्योंकि पेंडुलम की तरह डोल रहा मन कुछ क्षण के लिए शांत होगा चाहे कुछ किया जाए या नहीं जब तक दूसरा विचार उसे गतिशील नहीं कर दे। विचारों की श्रृंखला से मुक्त होने के लिए क्रिया के उठापटक की शरणागति लेनी पड़ती है एवं क्रिया के साथ हल्की अपेक्षा की परेशानी जन्म लेती है। जब अपेक्षा बढ़ती है उस समय फल के प्रति उदासीनता का सिद्धांत समझने के लिए अधिकांश कर्मयोगियों को भागवत गीता की शरणागति लेनी पड़ती है। चाहे भगवत गीता का सिद्धांत हो या फिर आधुनिक कर्म योगी के मन की अशांति, शुरुआत हमेशा विचार से ही होती है। हर सृष्टि के मूल में विचार एक बिंदु की तरह चल रहा है। क्या इससे यह मान लिया जाए कि शांति उदासीनता का पर्याय है? नहीं। शांति का अर्थ यहां गतिमान शांत अवस्था है। जैसे ट्रेन में सवार व्यक्ति को पेड़-पौधे खिड़की से देखने पर गतिशील लगते हैं, पर वे होते नहीं हैं। वैसे ही जीवन में चल रही भागम भाग में शांति को खोजा जा सकता है। सबसे पहले 'मैं हूं न' नारे पर खुद जरूरत से अधिक विश्वास कर लेना गैरजरूरी बेचैनी खरीद लेने जैसा है, जिससे सिर्फ अहं का तुष्टीकरण होता है।

स्वेच्छा से ही परिणाम असंभव

भागम-भाग जीवन का हिस्सा है, परंतु जीवन की दौड़ में भागते हुए यह सोच लेना कि जो मैंने चाहा है, उसी अनुरूप मेरा संसार चलेगा, तो इसमें अशांति के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता है। इस अशांति से बचाव के लिए मन को शांत एवं तृप्त करने के लिए गुरु के चरणों में, अपने देव के चरणों में निवेदन करने की परंपरा है। रामकृष्ण परमहंस हमेशा कहा करते थे कि हे मां! मैं यंत्र हूं और उसे बजाने वाली आप संगीतकार हैं। जो आप चाहती हैं, वही हो, बस इतने ही मेरी इच्छा है।

गुरु समर्पण में असीम शांति

सूत्र बस इतना ही है कि जिसे मन को शांत करने की इच्छा है, वह इसे प्राप्त करने की इच्छा नहीं रखता है। स्वस्थ मन से गुरु चरणों में समर्पण कर जीवन पथ पर शक्ति अनुसार दौड़ भाग करता रहता है। उसे ज्ञात है कि गुरु उसके अनुकूल परिस्थितियों में परिवर्तन कर देंगे। वह समय की प्रतीक्षा करता है और अपना कार्य करता रहता है।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

गर्मी में डिहाइड्रेशन से बचने के लिए खूब पीएं पानी

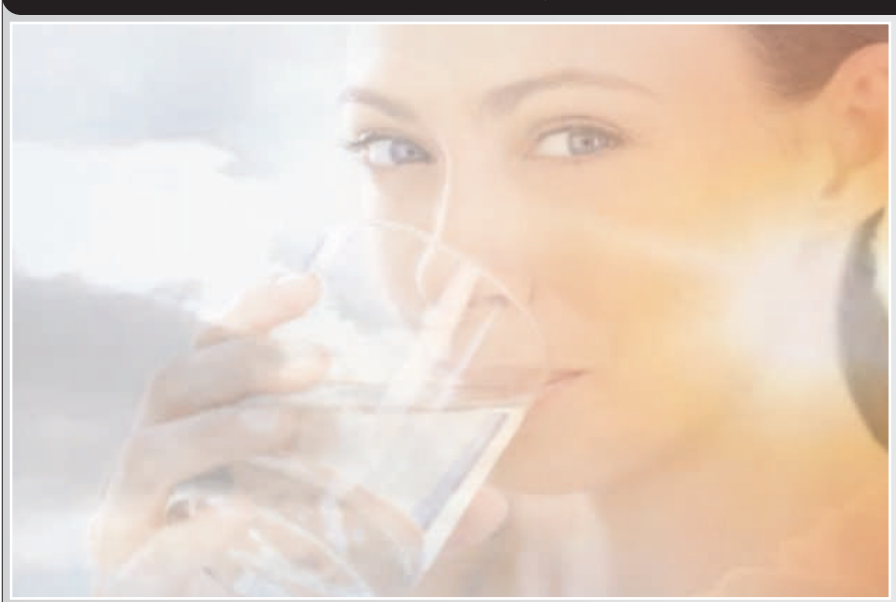

गर्मी अब धीरे-धीरे परवान चढ़ती जा रही है, ऐसे में शरीर में पानी की कमी डिहाइड्रेशन का कारण बन सकती है। जब गर्मी तेज होती है तो शरीर को ज्यादा पानी की जरूरत होती। इस मौसम में जब आप देर तक धूप में बिना खाए-पिए घूमते हैं, तो शरीर से पसीना अधिक निकलता है, जिससे शरीर में पानी की कमी हो जाती है। बार-बार पसीना आने से, टॉयलेट जाने से या काम के दौरान पानी कम पीने से शरीर में पानी की कमी हो जाती है। गर्मी में यदि तेज बुखार हो या लूज मोशन आ रहे हों तो शरीर बहुत बुरी तरह डिहाइड्रेट हो जाता है। डिहाइडेशन के लक्षणों में सांस लेने में दिक्कत, स्किन ड्राई या रैशेज, होठों का फटना या या खून आना, सिरदर्द, सुस्ती और थकान, कम एकाग्रता, सांस की बदबू, मांसपेशियों में दर्द, यूरिन कम या उसका रंग बदलना आदि शामिल हैं।

गर्मी में शरीर में पानी की मात्रा बनाए रखने के लिए रेगुलर पानी पिएं। एक दिन में कम से कम 8 ग्लास पानी पिएं। पानी के साथ-साथ नींबू पानी, आम पन्ना या फ्रेश जूस भी रेगुलर पिएं। तरबूज, खरबूज, संतरा, खीरा, ककड़ी खाएं, इनमें पानी की मात्रा होती है। गर्मी में खाने से पहले पानी जरूर पिएं। अल्कोहल, चाय-कॉफी कम कर दें। ओआरएस का घोल बनाकर रखें, दिन भर में 3 बार पिएं। घर से बाहर निकलते वक्त पानी की बोतल लेकर जाएं।

ये परेशानियां दूर करता है पानी

पेट की समस्या : रोजाना सुबह पानी पीने से डाइजेशन सिस्टम दुरुस्त रहता है और पेट से जुड़ी बीमारियों जैसे कब्ज की परेशानी दूर होती है।

सिरदर्द : एक रिसर्च के मुताबिक सिरदर्द के 90 % मामले शरीर में पानी की कमी की वजह से होते हैं। इसलिए 8-10 गिलास पानी जरूरी पिएं।

स्किन डिजीज : पर्याप्त मात्रा में पानी पीने से स्किन को नमी मिलती है, जिससे ये चमकदार बनती है और स्किन डिजीज भी न के बराबर होती है।

इम्यूनिटी : पानी शरीर से टॉक्सिन को बाहर निकालता है, जिससे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और वेट कंट्रोल रहता है।

सुस्ती : जब भी थका या सुस्ती फील हो, तो पानी पिएं। इससे खून में ज्यादा लाल रक्त कोशिकाओं की वजह से ज्यादा ऑक्सीजन और एनर्जी मिलती है।

भविष्य-निधि के लिए जरूरी दस्तावेजों को ले रिटायर्ड इस्पातकर्मियों की परेशानी होगी दूर

सहूलियत... सेवानिवृत्त कर्मियों की सुविधा के लिए बीएसएल ने लांच की वेबसाइट

संवाददाता
बोकारो : बोकारो इस्पात संयंत्र से सेवानिवृत्त या सेवानिवृत्त होने वाले कर्मियों की सुविधा के लिए सहयोग नामक एक वेबसाइट लांच की गई। इससे खास तौर से भविष्य निधि के लिए जरूरी दस्तावेजों से संबंधित परेशानी दूर हो सकेगी। सेवानिवृत्त कर्मियों तक आवश्यक जानकारियां पहुंचाने के उद्देश्य से सहयोग डॉट बोकारो स्टील डॉट इन वेबसाइट की लांचिंग बीएसएल के अधिशासी निदेशक (वित्त एवं लेखा) एस. रंगानी तथा अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) राजन प्रसाद ने की। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबन्धक (कार्मिक) हरि मोहन झा, मुख्य महाप्रबन्धक (सी एंड आईटी) ए बंकिरा, महाप्रबन्धक (सी एंड आईटी) एके चौधरी, महाप्रबंधक (कार्मिक-सेवाएं) सोनी सिंह, उप महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा) आरके ताह, प्रबंधक (कार्मिक-एफएससी) अंकिता देव, प्रबंधक (सी एंड आईटी) श्वेता सहित्त वेबसाइट विकसित करने वाले टीम के सदस्य उपस्थित थे।
आधिकारिक सूत्रों के अनुसार उक्त वेबसाइट के माध्यम से वैसे सेवानिवृत्त होने वाले या सेवानिवृत्त बीएसएल कर्मी जो एन्हांस्ड ईपीएस-95 का विकल्प चुनते हैं, उन्हें ईपीएफओ की वेबसाइट पर अपलोड करने के लिए जरूरी सर्टिफिकेट सहयोग वेबसाइट से डाउनलोड कर सकेंगे। इस वेबसाइट के ईपीएस-95 लिंक में सर्कुलर, एम्प्लायर सर्टिफिकेट और एम्प्लाई अंडरटेकिंग उपलब्ध है। ईपीएस-95 के तहत एन्हांस्ड पेंशन फॉर्म भरने की विस्तृत जानकारी भी इस वेबसाइट पर उपलब्ध है। यह वेबसाइट बीएसएल से सेवानिवृत्त हुए कर्मियों को सहज तरीके से ईपीएस-95 की एन्हांस्ड पेंशन के लिए आवेदन भरने हेतु वांछित जानकारियां उपलब्ध कराएगी।
इसके अलावा इस वेबसाइट पर अंतिम निपटारा से संबंधित अन्य जानकारी जैसे विभिन्न प्रपत्र, मेडिक्लेम से संबंधित सर्कुलर, सेल पेंशन, एनपीएस, विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं से संबंधित जानकारी, मृत्यु के मामलों से शामिल भुगतान, सेवानिवृत्ति गाइड-चलते चलते तथा अन्य नवीनतम जानकारी भी मिलेगी। यह वेबसाइट वर्तमान में डेस्कटॉप संस्करण में उपलब्ध है।

जाइंट आप्शन फॉर्म भरने के लिए हेल्प डेस्क 17 तक

बीएसएल के सेवानिवृत कर्मियों को ईपीएस - 95 के तहत ईपीएफओ पोर्टल पर जाइंट आप्शन फॉर्म भरने में मदद हेतु बीएसएल द्वारा मैत्री भवन, सिटी सेंटर के अलावा एचआरडी (कोविड केयर सेंटर) में भी हेल्प डेस्क खोली गई है। कार्यालय के दिनों में ये हेल्पडेस्क 17 अप्रैल तक खुले रहेंगे, जहां तैनात टीम सेवानिवृत कर्मियों को फॉर्म भरने, उनका प्रिंट आउट निकालने और उसे जमा करने संबंधी आवश्यक मदद करेगी।

सिनेमा में आज समृद्ध भारतीय संस्कृति को आधार बनाने की जरूरत : नंदकुमार

राज्यस्तरीय फिल्म फेस्टिवल के पोस्टर का लोकार्पण

संवाददाता
बोकारो : बोकारो इस्पात नगर के सेक्टर-4 स्थित क्लासिक होटल के सभागार में चित्रपट झारखण्ड द्वारा आगामी 23 से 25 जून, 2023 को रांची में आयोजित होने वाले राज्य स्तरीय फिल्म फेस्टिवल के पोस्टर का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर चित्रपट झारखण्ड के अध्यक्ष नन्द कुमार सिंह ने कहा कि भारतीय सिनेमा में आज अपने समृद्ध भारतीय संस्कृति के मूल्यों को आधार बनाने की नितान्त आवश्यकता है। जिन सांस्कृतिक मूल्यों के विषय लेकर भारतीय सिनेमा की शुरूआत हुई थी, आज उसमें काफी बिखराव दिखने लगा है। इसीलिए चित्रपट झारखण्ड का गठन किया गया है। यह संगठन राज्य में लगातार कार्यशालाओं का आयोजन कर एक तरफ श्रेष्ठ फिल्म निमाताओं की टीम खड़ी कर रहा है। वहीं युवाओं के लिए रोजगार के अवसर भी सृजित कर रहा है।
इस अवसर पर चलचित्र महोत्सव के बारे में जानकारी देते हुए चित्रपट झारखण्ड के अधिकारी राकेश रमण ने बताया कि झारखण्ड राज्य की भाषा-संस्कृति और जनजातीय जीवन को केंद्र में रखकर यह महोत्सव किया जा रहा है, जिसमें राज्य के फिल्मकार मात्र 250 तथा 100 रुपये का शुल्क भरकर प्रतिभागी बन सकते हैं। इसकी पूरी जानकारी वेबसाइट चित्रपट झारखंड के वेबसाइट पर उपलब्ध है। साथ ही पोस्टर पर दिये गये क्यूआर कोड को स्कैन करके भी जानकारी ली जा सकती है।
श्री कुमार ने यह भी बताया कि इस महोत्सव में झारखण्ड के फिल्मकारों के लिए कुल मिलाकर दो लाख के पुरस्कार भी रखे गये हैं। महोत्सव एवं इसके विषय पर आधारित एक स्मारिका भी प्रकाशित होगी। इस अवसर पर साहित्यकार संजय चौधरी, अजय चौधरी, राम अयोध्या सिंह, चित्रपट बोकारो से रतन महतो, स्वरूप पाण्डेय, अमरजी सिन्हा, पीयूष रंजन दास, श्रीमती अर्चना चौधरी, श्रीमंगल कान्त, प्रशांत आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन राकेश रमण ने किया।

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल
जंगल में मांदर बजते हैं
नृत्य समूहों में सजते हैं
जब थिरकें सज नवबालाएं
जंगल मस्त मगन हो गाएं

वन थिरके तो लगता जैसे
नाच उठा है सारा यह संसार...
जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल

चल जंगल चल, चल जंगल

जंगल में 'झन-झन' हैं रातें
जंगल करता मन की बातें
चांद-सितारे सुनते रहते
आंखों से आंसू हैं बहते
जंगल की रातें कहती हैं
मत डर, उषा लाती खुशी अपार...
जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल

(क्रमशः)

कुमार मनीष अरविन्द

पेज- एक का शेष

अपनों को कर के अनाथ...

जगरनाथ महतो 2020 में कोरोना संक्रमण का शिकार हो गए थे। उनका पूरा फेफड़ा संक्रमित हो गया था। 19 अक्टूबर 2020 को एयर लिफ्ट कराकर उन्हें एमजीएम अस्पताल, चेन्नई ले जाया गया था, जहां 10 नवंबर 2020 को लंग्स ट्रांसप्लांट हुआ था। वहां 22 दिनों तक एक्मा सपोर्ट में रहकर जिंदगी की जंग जीते थे। फिर छह माह बाद वापस लौटे। अंततः जनसेवा व राज्य सेवा में लग गए। इधर पुनः 14 मार्च को विधानसभा में पेट दर्द हुआ तो रांची के पारस अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां से उन्हें एयर लिफ्ट कराकर एमजीएम अस्पताल चेन्नई भेजा गया। वहां 6 अप्रैल की अहले सुबह उन्होंने अंतिम सांस ली।

झारखंडी संस्कृति के थे संरक्षक

मंत्री जगरनाथ महतो एक जुझारू, कर्मठ और तेज तर्रार आंदोलनकारी होने के साथ ही कृषि प्रेमी, शिक्षा प्रेमी और सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत झूमर के प्रति काफी रुचि रखते थे। गांव में होने वाले सोहराय पर्व, करमा पर्व और बरदखूंटा में होने वाले झूमर प्रतियोगिता में कार्यक्रम में शरीक होकर झारखंड संस्कृति को बचाने के लिए सदा ही सक्रिय रहा करते थे। 1932 खतियान का वह सबसे अधिक पक्षधर थे।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा दामिनी प्रिन्टर्स, जेब्री.- 12, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बोकारो से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई.पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)

सूचना-प्रसारण मंत्रालय ने मीडिया संस्थानों को चेताया-

सट्टेबाजी को बढ़ावा दिया तो होगी कानूनी कार्रवाई

जारी एडवाजरी में कहा- प्रेस पर बड़ी जिम्मेदारी, राजस्व-सृजन नहीं हो एकमात्र उद्देश्य

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : ऑनलाइन गेमिंग के दौर में सट्टेबाजी और रुपयों का अवैध खेल काफी बढ़ गया है। आए दिन लोग इसकी लत का शिकार होकर अपनी गाढ़ी कमाई गवां रहे हैं। खास तौर से युवा वर्ग तो छात्र-जीवन से ही इसकी चपेट में हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि अब कतिपय मीडिया संस्थान सट्टेबाजी करानेवाले प्लेटफॉर्म के मददगार बन राजस्व की खातिर खुलकर उनके बड़े-बड़े विज्ञापन छापने लगे हैं। इस पर सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार ने कड़ी आपत्ति जताते हुए ऐसे मीडिया संस्थाओं को फटकार लगाई है। एक एडवाइजरी जारी करते हुए इस पर मंत्रालय ने कड़ी आपत्ति जताते हुए ऐसे मीडिया संस्थानों को साफ तौर से चेताया भी है कि अगर अब ऐसा हुआ, तो कानूनी कार्रवाई तय है।

आधिकारिक सूत्रों के अनुसार एडवाइजरी में मीडिया संस्थाओं, मीडिया प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन विज्ञापन मध्यस्थों को सलाह दी गई है कि वे सट्टेबाजी प्लेटफॉर्म के विज्ञापन/प्रचार सामग्री को प्रसारित करने से परहेज करें।

मंत्रालय ने मुख्यधारा के अंग्रेजी और हिन्दी समाचार पत्रों द्वारा हाल में सट्टेबाजी वेबसाइटों के विज्ञापनों और प्रचार सामग्री को प्रकाशित करने पर कड़ा ऐतराज जताया है। समाचार पत्रों, टेलीविजन चैनलों और ऑनलाइन समाचार प्रकाशकों सहित सभी मीडिया प्रारूपों के लिए एडवाइजरी जारी की गई है और हाल के दिनों में मीडिया में इस तरह के विज्ञापन दिखाए जाने के विशिष्ट उदाहरण पेश किये गए हैं। मंत्रालय ने एक खास सट्टेबाजी प्लेटफार्म द्वारा दर्शकों को अपनी वेबसाइट पर एक स्पोर्ट्स लीग देखने के लिए प्रोत्साहित करने पर भी आपत्ति जताई है, जो प्रथम दृष्टया कॉपीराइट अधिनियम, 1957 का उल्लंघन प्रतीत होता है।

मीडिया के कानूनी दायित्व के साथ-साथ नैतिक कर्तव्य पर जोर देते हुए एडवाइजरी प्रेस काउंसिल के पत्रकारिता आचरण के नियम के प्रावधानों का संदर्भ देती है, जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ यह उल्लेख किया गया है कि ''समाचार पत्रों को ऐसा विज्ञापन प्रकाशित नहीं करना चाहिए, जिसमें कुछ भी गैरकानूनी हो या अवैध...'' और आगे कहा गया है कि समाचार पत्रों और पत्रिकाओं को पीआरबी अधिनियम, 1867 की धारा 7 के तहत विज्ञापन सहित सभी पठन-सामग्री के लिए संपादक की जिम्मेदारी को देखते हुए विज्ञापन इनपुट की जांच नैतिक के साथ-साथ कानूनी दृष्टि से करनी चाहिए। प्रेस का एकमात्र उद्देश्य राजस्व सृजन नहीं हो

सकता और न ही होना चाहिए, प्रेस की बहुत बड़ी सार्वजनिक जिम्मेदारी होती है।

उल्लेखनीय है कि मंत्रालय ने पहले भी जून और अक्टूबर, 2022 के महीनों में एडवाइजरी जारी की थी, जिसमें कहा गया था कि सट्टेबाजी और जुआ गैरकानूनी है और इसलिए ऐसी गतिविधियों के प्रत्यक्ष या सरोगेट विज्ञापन उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019, प्रेस काउंसिल अधिनियम 1978, सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यवर्ती दिशा-निर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता) नियम, 2021 और अन्य प्रासंगिक कानूनों का उल्लंघन करते हैं।

उपनिदेशक (डिजिटल मीडिया) क्षितिज अग्रवाल की ओर से जारी उक्त एडवाइजरी में कहा गया है- मंत्रालय इस तरह की प्रथाओं पर कड़ी आपत्ति जताता है और मीडिया प्लेटफॉर्म और विभिन्न ऑनलाइन विज्ञापन मध्यस्थों सहित सभी हितधारकों से किसी भी रूप में ऐसे विज्ञापनों/प्रचार सामग्री को दिखाने से तुरंत परहेज करने का आग्रह भी करता है। समाचार प्रकाशकों आदि द्वारा उपरोक्त सलाह का पालन नहीं करने की स्थिति में सरकार विभिन्न कानूनों के तहत उचित कार्रवाई करने के लिए बाध्य होगी।